प्लेटो के अनुसार प्रेम सौन्दर्य का मार्ग है। प्लेटो ने सुन्दर को शिव व सत्य का अभिन्न अंग माना है। इनके अनुसार सत्यम् शिवम व सुन्दरम् ही शाश्वत है। वास्तव में सुन्दर वह है जो बाहर से नही अन्दर से सुन्दर है। इसी उच्च विचार धारा पर उसका परम सौन्दर्य का सिद्धान्त आधारित है।

प्लेटो का अनुकरण का सिद्धान्त:

प्लेटो का कला सम्बन्धि सिन्द्धात अनुकृति सिन्द्धात कहा जाता है?

इसमें चित्रकार केवल पूर्ण सत्य की अनुकृति करता है जिससे हमारी इन्द्रीयों को धोखा होता है उसमें छल कपट की छवि होती है। ऐसी कला से तो बढ़ई लौहार व कृषक की कला अच्छी होती है। क्योंकि भौतिक दृष्टि से कम से कम वे जीवन उपयोगी वस्तु का निर्माण करती है। कलाकार तो केवल दर्पण तत्य प्रतिबिम्ब उतारती है जिससे किसी प्रकार का व्यवहारिक लक्ष्य पूर्ण नही होता। कवि या चित्रकार प्रकृति के दर्पण का कार्य करता है जिसमें ये पेड़ पौधे पशु - मनुष्य आदि जिन्हे वह अपने चारों और संसार मे देखता है। कला की इसी अनुकृणात्मक प्रवृति के कारण कला के प्रति प्लेटो का दृष्टिकोण निन्दात्मक था। वह उसे नकल की युक्ति से अधिक कुछ भी नही मानता था। उनके अनुसार जड़ वस्तुओं के सौन्दर्य जो सदाबहार रहता है सास्वत होता है।

Scanned with CamScanner

(प्लेटो जड़ वस्तु के सौन्दर्य को परम वस्तु के सौन्दर्य तक पहुचने का साधन मात्र है उसने स्पष्ट लिखा है कि – "यदि मानव के पास सौन्दर्य दर्शन के लिए नेत्र है तो वह अविनाशी परमात्मा का मित्र बन जाता है")

इस प्रकार से प्लेटो के मतानुसार समस्त जड़ जगत अनुकृति मात्र के अतिरिक्त कुछ भी नही है। उसने कला को प्रतिबिम्ब का प्रतिबिम्ब माना है। कला कृतिया प्राकृतिक वस्तुओं से और शिल्प कला से भी गई गुजरी है बढ़ई की मेज कम से कम उपयोगी तो है पर कलाकृत्तियाँ मानव इन्द्रीयों को धोखे में डाल देती है क्योंकि एक वृक्ष मनुष्य को सूर्य के ताप से छाया व सुरक्षा प्रदान करता है गाय दूध देती है बढ़ई की कुर्सी आराम से बैठने का काम देती है लेकिन ये चित्रित गाय व कुर्सी किस काम में आती है वह पूछता है ? जिस उद्देश्य को लेकर कलाकार कलाकृति को निरूपित करता है उसकी पूर्ति प्रकृति की ओर से पूर्ण होती है कलाकृत्तियाँ तो यथार्थ से तिगुनी दूर होती हैं।
कोसो

प्लेटो ने अपने विश्वविख्यात ग्रन्थ 'Republic' में कलाकारो के तीन वर्ग बताए –

1. स्वयं ईश्वर
2. बढ़ई (शिल्पी)
3. कलाकार (चित्रकार, मूर्तिकार, काव्यकार)

प्रथम श्रेणी के कलाकार स्वयं ईश्वर है, दूसरे का सर्जन कर्ता है बढ़ई व तीसरे का चित्रकार। इस क्रम में कलाकार तीसरे व सबसे नीचले स्थान पर आता है। इसी कारण कलाकार तिगुना दूर है।

सच्चे सौन्दर्य का दर्शन केवल विचार लोक में ही सम्भव हैं इसी आदर्शवादी मुद्रा में प्लेटो ने कला की इन कड़ कड़े शब्दो में निन्दा की हैं।

"नकल बुरी चीज हैं, समस्त कला नकल करती है इसलिए सभी कला बुरी हैं।"

प्लेटो ने कला में प्रतिबिम्ब का बिम्ब देखा। कला छल कपट है धोका है सत्य नही इसलिए यह बुरी है।

प्लेटो ने अपने ग्रन्थ Rebublic के दसवें अध्याय में चित्रकला को प्रतीत का अनुकरण कहा है प्लेटो ने इस अनुकृणात्मक प्रतीत की निन्दा की हैं। किन्तु उस के साथ ही प्रेरित कला की भूरी-भूरी प्रशंसा की है। जब कला का अर्थ दैवीय प्रेरणा से उत्प्रेरित हैं भावो में खो जाने वाला हो जाता है व पवित्र कला का सृजन करने लगता है। प्लेटो ने इस प्रकार उत्प्रेरित कला सृजन को अनुप्रणात्मक कला कौशल से सर्वथा भिन्न माना है इस अर्थों में प्लेटो ने कला का मर्म आन्तरिक प्रेरणा माना है दैवी प्रेरणा के बिना केवल कौशल मात्र से यदि कलाकार बनाना चाहेगा तो उसे शर्मिन्दा होना पड़ेगा।

प्लेटो ने "लॉज" नामक संवाद में कला को ऐन्द्रिय आनन्द आनन्द का माध्यम माना है और उपरोक्त उच्च स्तरीय कला को ही अपने काल्पनिक लोक "Republic" मे स्थान दिया है जो ऐन्द्रिय आनन्द प्रदान कराने के साथ-साथ दर्शक में दीव्यत्व की भावना प्रस्फुटित करती है।

"यान" ग्रन्थ मे प्लेटो ने सन्देह सृजनात्मक

कलाकारो की स्तुति व वन्दना करता है। इस प्रकार के कलाकार, कवि, चित्रकार, मूर्तिकार, नृत्यकार अपनी साधना मे वृत दिव्य लोक में पहुंच जाते है और स्वयं परमात्मा उनके माध्यम से बोलने लगता है इस प्रकार कलाकार आलौकिक अनुभूति कर लेता है और उसके उपरान्त वह जो सृजन करता है वह उसकी सच्ची कलाकृति है। आलौकिक कला ही सच्ची कला है।

इसी प्रकार प्रो० व्हाईट हेड ने लिखा...

"सम्पूर्ण यूरोपिय दर्शन शास्त्र प्लेटो के दर्शन पर लिखी हुई धारावाहिक कमेन्ट्री है।"

प्लेटो की आलोचना :=))

1) प्लेटो ने कला में नैतिकता को अनिवार्य माना कलाकारो का कहना है कि यदि कला में नैतिकता का अधिक आग्रह रहे तो कला के लिए एक बन्धन होगा।

2) कला में संवेग भी अवश्य होते है दुख हो या सुख। परन्तु प्लेटो ने इन्द्रिय संवेगो को कला में स्थान नही दिया वे ये तो मानते थ कि मनोभावो की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति ही कला है पर उनके मन में नैतिक आग्रह अधिक था।

3) प्लेटो ने कला को अनुकृति माना परन्तु वह अनुकरण नही बल्कि एक मौलिक सृजन है, इसमे कल्पना व कलाकार का आत्मतत्व भी होता है व कलाकार के मन की भावनाऐं विद्यमान होती है।

4) कला नकल नही सृजन निर्माण व पुन: निर्माण यदि कला यथार्थ की नकल होती तो कैमरे के आविष्कार के बाद समाप्त हो गई होती।

Scanned with CamScanner